IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# किशोर विद्यार्थियों के पालक–पाल्य संबंध, लिंग एवं क्षेत्र का उनके कुंठा पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती कलावती, सहायक प्राध्यापक (शिक्षा), उदय महाविद्यालय, जामुल, भिलाई,छ.ग

डॉ. ज्योति प्रकाश कनौजे, सहायक प्राध्यापक (शिक्षा) एम.जे.महाविद्यालय भिलाई छ.ग.

**सारांश**

एक बालक अपने माता–पिता के साथ क्यों तालमेल नहीं बैठा पाता? किन कारणों से बालक के भीतर कुंठा की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। इन प्रश्नों के उत्तर खोजने हेतु प्रस्तुत शोधपत्र में किशोर विद्यार्थियो के पालक–पाल्य संबंध, लिंग एवं क्षेत्र का उनके कुंठा पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन किया गया है। शोध हेतु न्यादर्श के रूप मे 400 किशोर विद्यार्थियों का चयन गैर आनुपातिक यादृच्छिक विधि के द्वारा किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में पालक–पाल्य संबंध ज्ञात करने के लिए डॉ. नलिनी राव व्दारा निर्मित पालक–पाल्य संबंध मापनी तथा कुंठा के मापन हेतु डॉ. श्रीमती के शर्मा व्दारा निर्मित कुंठा मापनी तथा का प्रयोंग किया गया है। उपकरणों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण 3 way ANNOVA के माध्यम से किया गया है। प्रस्तुत शोध के परिणाम से स्पष्ट होता है कि पालक–पाल्य संबंध एवं लिंग का मुख्य प्रभाव कुंठा पर पाया गया है जबकि क्षेत्र का मुख्य प्रभाव नहीं पाया गया है। इसी प्रकार पालक–पाल्य संबंध एवं लिंग, पालक–पाल्य संबंध एवं क्षेत्र, लिंग एवं क्षेत्र एवं पालक–पाल्य संबंध, लिंग एवं क्षेत्र का सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव कुंठा पर देखने मिला है।

Keywords:– पालक–पाल्य संबंध, कुंठा प्रवृत्ति

## प्रस्तावना –

समाज में अपराध प्रवृत्ति बढ़ रही है, तथा आपसी संघर्ष हो रहा है यदि इस पर ध्यान नही दिया जायेगा तो असामाजिकता बढ़ेगी। किसी भी देश की प्रगति या विकास वहां के छात्रों की शिक्षा पर निर्भर करता है, लेकिन आजकल के छात्रों में कुंठा की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। हम हर दिन अखबारों या दूरदर्शन के माध्यम से यह देखते है कि विद्यार्थियों का कुंठित व्यवहार उनके व उनके अभिभावकों के लिए बहुत ही कष्टप्रद हो चुका है। छात्र आपस में झगड़ते है, सड़कों पर कोहराम मचाते हैं, और कभी–कभी तो हत्या और आत्महत्या जैसा कदम भी उठा लेते हैं। ऐसे में हमें इस गंभीर समस्या की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। कुंठा के कारण छात्र समाज से दूर रहने लगते है, और उनमें सामाजिकता संवेदनशीलता का पतन देखने को मिलता है। विद्यार्थियों का कुंठित व्यवहार एवं उनका सामाजिक रूप से असंवेदशील होना भविष्य के लिए और वर्तमान के लिए एक विकराल समस्या उत्पन्न कर रहा है। अतः हमें मिलकर इस ओर विचार करने की आवश्यकता है।

वर्तमान समय में विद्यार्थियों के भीतर अनेक प्रकार की मनोवैज्ञानिक समस्याओं का जन्म हो रहा है। ये मनोवैज्ञानिक समस्याएं विद्यार्थियों के व्यवहार को नकारात्मक रुप से प्रभावित कर रहे हैं। विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक समस्याओं में कुंठा एक महत्वपूर्ण समस्या है जो वर्तमान में विद्यार्थी ही नहीं समस्त व्यक्तियों में देखने

मिल रहा है। विद्यार्थियों के वातावरण में समायोजित ना होना कुंठा का एक कारण बन गया है, जिसके परिणाम स्वरूप बालक का समाज विरोधी कार्य करता है, जिसमें हिंसा, दमन, अहम्, उग्रता, अपराध इत्यादि शामिल है। विद्यार्थियों के कुंठित होने के अनेक कारण हैं, जिसमें पालक–पाल्य संबंध भी एक महत्वपूर्ण कारक है। पालक–पाल्य संबंधों को कुंठा का एक कारक मानते हुए, प्रस्तुत शोध अध्ययन में किशोर विद्यार्थियो के पालक–पाल्य संबंध, लिंग एवं क्षेत्र का उनके कुंठा पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

## संबंधित शोध अध्ययन –

**माथुर (2001)** ने किशोरों में कुंठा के कारण और उनका आकांक्षा स्तर से संबंध का अध्ययन किया गया। अध्ययन में निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले किशोरो मे कुंठा के स्तर तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का कुंठा पर प्रभाव का अध्ययन किया गया। अध्ययन में निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले किशोरों की कुंठा के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अतंर नही पाया गया। उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोरों की तुलना मे निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोरों मे अपेक्षाकृत कुंठा अधिक पाई गई।

**नडार (2002)** ने कला समूह की कक्षा 11वी में अध्ययनरत् कुंठित और अकुंठित विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में छात्र और छात्राओं के आत्मविश्वास और कुंठा के मध्य संबंध और छात्र और छात्राओ की शौक्षिक उपलब्धि और कुंठा के मध्य संबंध ज्ञात किया गया। अध्ययन में पाया गया कि छात्रों मे आत्मविश्वास और कुंठा के मध्य सामान्य ऋणात्मक सहसंबंध तथा छात्राओं मे उच्च ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया। जबकि छात्रों मे शैक्षिक उपलब्धि और कुंठा के मध्य नगण्य धनात्मक तथा छात्राओं मे अति निम्न धनात्मक सहसंबंध पाया गया है।

**वर्मा एवं खान (2014)** ने उच्चतर विद्यालय के विद्यार्थियों के पालक–पाल्य संबंध का उनके आत्मविश्वास पर प्रभाव का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष पाया कि पालक–पाल्य संबंध व आत्मविश्वास के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

**सरिता, सोनिका एवं पूजा (2016)** ने रोहतक हरियाणा के सेकेन्डरी स्कूल के बच्चों के पालक–पाल्य संबंध का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में उन्होंने 100 छात्र व छात्रा का चयन किया, जो निजी व शासकीय विद्यालयों से चुने गए थे। अध्ययन में निष्कर्ष पाया कि लडकों के संबंध अपने माता–पिता से लड़कियों की तुलना में अधिक अच्छे पाए गए।

**डोलाड, मिलर (2016)** ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि पालक–पाल्य संबंध पर आक्रामकता एवं कुंठा का प्रभाव में निराश एवं कुंठित व्यक्ति आक्रामक व्यवहार करते है। यह एक प्रकार से अन्तर्नोद सिध्दान्त (Drive theory) पर आश्रित है अर्थात् दूसरों को नुकसान पहुंचाने के अन्तर्नोद अथवा प्रेरणा के कारण आक्रामकता उत्पन्न होती है यह एक प्रकार के उद्दोलन की अवस्था है जो आक्रामकता के जैविक सिध्दांत से भिन्न है। यह पूर्ण रूप से मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण है जिसके अनुसार मनोवैज्ञानिक कारक कुंठा को उत्पन्न करते हैं।

उक्त अनेक अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि कुंठा अनेक कारकों से प्रभावित हो रहा है, जिसमें पालक–पाल्य संबंध भी एक कारक है। प्रस्तुत अध्ययन में इसी कारक का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

### समस्या कथन –

किशोर विद्यार्थियो के पालक–पाल्य संबंध, लिंग एवं क्षेत्र का उनकी कुंठा पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन।

## अध्ययन का उद्देश्य –

किशोर विद्यार्थियो के पालक–पाल्य संबंध, लिंग एवं क्षेत्र का उनकी कुंठा पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

## परिकल्पना –

किशोर विद्यार्थियों के पालक–पाल्य संबंध, लिंग एवं क्षेत्र का उनकी कुंठा पर कोई सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

## शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण अनुसंधान का प्रयोग किया गया है।

## शोध न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध अध्ययन न्यादर्श के रूप मे 200 छात्र एवं 200 छात्राओं को मिलाकर कुल 400 विद्यार्थियों का चयन गैर आनुपातिक यादृच्छिक विधि से किया है।

## शोध उपकरण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन मे किशोरों के पालक–पाल्य संबंध मापने हेतु डॉ. नलिनीराव द्वारा निर्मित पालक–पाल्य संबंध मापनी तथा कुंठा स्तर मापने हेतु डॉ. श्रीमती के शर्मा द्वारा निर्मित कुंठा मापनी का प्रयोग किया गया है।

## अध्ययन के चर –

**स्वतंत्र चर** – पालक–पाल्य संबंध
**जनांककीय चर** –
**क्षेत्र** – ग्रामीण एवं शहरी
**लिंग** – छात्र, छात्रा
**आश्रित चर** – कुंठा

## सांख्यकीय विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु 2x2x2 Three Way Annova का प्रयोग किया गया।

## आंकड़ों का विश्लेषण –

**तालिका कमांक –1**

**किशोर विद्यार्थियों के पालक–पाल्य संबंध, लिंग एवं क्षेत्र का उनकी कुंठा पर अन्तः क्रियात्मक प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण**

| प्रसरण का स्त्रोत | वर्ग का योग | डी एफ | वर्ग का योग | F अनुपात | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|
| पालक–पाल्य संबंध | 8515.738 | 115 | 74.050 | 5.181 | <.001 |
| लिंग | 165.218 | 1 | 165.218 | 11.559 | <.001 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्षेत्र | 9.618 | 1 | 9.618 | 0.673 | 413 |
| पालक–पाल्य संबंध x लिंग | 1190.472 | 14 | 85.034 | 5.949 | <.001 |
| पालक–पाल्य संबंध x क्षेत्र | 964.020 | 19 | 50.738 | 3.550 | <.001 |
| क्षेत्र x लिंग | 207.429 | 1 | 207.429 | 14.512 | <.001 |
| पालक–पाल्य संबंध x लिंग x क्षेत्र | 11388.489 | 166 | 68.605 | 4.800 | <.001 |
| त्रुटि | 3330.308 | 233 | 14.293 | | |
| संशोधित योग | 14718.797 | 399 | | | |

*= 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक, NS = 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक, N = 400

प्रस्तुत तालिका कं 1 के आधार पर निम्न परिणाम प्राप्त हो रहे हैं।

## पालक–पाल्य संबंध का कुंठा पर मुख्य प्रभाव –

सारणी क्रमांक –1 के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि पालक–पाल्य संबंध का मुख्य प्रभाव का एफ मूल्य (स्वतंत्र अंश 115) है जो कि 0.001 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अतः हम कह सकते है कि विद्यार्थियों के पालक पाल्य संबंध का कुंठा पर सार्थक प्रभाव पड़ रहा है। इस प्रभाव की पुष्टि हेतु उच्च एवं निम्न पालक–पाल्य संबंध के आधार पर कुंठा का मध्यमान एवं प्रमाप विचलन ज्ञात किया गया है। उच्च पालक–पाल्य संबंध का विद्यार्थियों को कुंठा का मध्यमान 25.34 है जबकि निम्न पालक–पाल्य संबंध वाले विद्यार्थियो के कुंठा का मध्यमान 24.45 है अतः स्पष्ट होता है कि उच्च पालक–पाल्य संबंध वाले विद्यार्थियों मे कुंठा का स्तर निम्न पालक–पाल्य संबंध वाले विद्यार्थियो से अधिक पाया गया।

### तालिका कमांक –1.1

पालक–पाल्य संबंध के आधार पर कुंठा का मध्यमान तथा प्रमाप विचलन

| पालक–पाल्य संबंध | N | M | SD |
|---|---|---|---|
| उच्च | 200 | 25.34 | 6.33 |
| निम्न | 200 | 24.45 | 6.016 |

## लिंग का कुंठा पर मुख्य प्रभाव –

सारणी क्रमांक 1 स्पष्ट करता है कि लिंग का मुख्य प्रभाव का एफ मूल्य (स्वतंत्र अंश 1) है जो कि 0.001 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः हम कह सकते है कि विद्यार्थियों के लिंग का कुंठा पर सार्थक प्रभाव पड़ रहा है। प्रसरण के विश्लेषण सारणी क्रमांक 1 में लिंग का कुंठा पर सार्थक प्रभाव पाया गया है। इस प्रभाव की पुष्टि हेतु छात्र एवं छात्राओं के कुंठा का मध्यमान एवं प्रमाप विचलन ज्ञात किया गया है। छात्रों की कुंठा का मध्यमान 24.97 एवं छात्राओं की कुंठा का मध्यमान 24.82 प्राप्त हुआ है जो स्पष्ट करता है कि छात्र एवं छात्राओ के कुंठा के मध्यमान में पर्याप्त अतंर है जो इस बात का सूचक है कि लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की कुंठा मे पर्याप्त अंतर है। अध्ययन मे छात्रों की कुंठा छात्राओं से अधिक पाई गई।

**सारणी क्रंमाक – 1.2**

**लिंग के आधार पर कुंठा का मध्यमान तथा प्रमाप विचलन**

| लिंग | N | M | SD |
|---|---|---|---|
| छात्र | 200 | 24.97 | 6.62 |
| छात्राएं | 200 | 24.82 | 5.72 |

## क्षेत्र का कुंठा पर मुख्य प्रभाव –

सरणी क्रमांक 1 स्पष्ट करता है कि क्षेत्र का मुख्य प्रभाव का एफ मूल्य (स्वतंत्र अंश 1) है जो कि 0.001 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों के क्षेत्र का कुंठा पर सार्थक प्रभाव नही पड़ रहा है।

## पालक–पाल्य संबंध और लिंग का कुंठा पर अतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन –

पालक–पाल्य संबंध और लिंग का एफ मूल्य 5.949 (स्वतंत्र अंश 115) है जो कि 0.001 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अतः हम कह सकते है पालक–पाल्य संबंध और लिंग का सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव पाया गया। प्रसरण के विश्लेषण सारणी क्रमांक–1 से स्पष्ट होता है कि उच्च पालक–पाल्य संबंध वाले छात्रों की कुंठा का मध्यमान 25. 9 है एवं छात्राओं की कुंठा का मध्यमान 24.78 है। जबकि निम्न पालक–पाल्य संबंध वाले छात्रों के कुंठा का मध्यमान 24.05 तथा छात्राओं की कुंठा का मध्यमान 24.86 है। अतः उच्च पालक–पाल्य संबंध वाले छात्रों में कुंठा का स्तर अधिक पाया गया है।

**सारणी क्रंमाक – 1.3**

**पालक–पाल्य संबंध और लिंग के आधार पर कुंठा का मध्यमान तथा प्रमाप विचलन**

| पालक–पाल्य संबंध | छात्र | | | छात्राएं | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | M | SD | N | M | SD | N |
| उच्च | 25.9 | 7.23 | 100 | 24.78 | 5.24 | 100 |
| निम्न | 24.05 | 5.84 | 100 | 24.86 | 6.199 | 100 |

## पालक–पाल्य संबंध और क्षेत्र का कुंठा पर अतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन –

प्रसरण के विश्लेषण सारणी क्रंमाक 1 मे शहरी क्षेत्र के उच्च पालक पाल्य संबंध का मध्यमान 24.92 एवं शहरी क्षेत्र के निम्न पालक पाल्य संबंध वाले छात्रो के कुठां का मध्यमान 23.54 प्राप्त हुआ। ग्रामीण क्षेत्र के उच्च पालक पाल्य संबंध का कुठां का मध्यमान 23.5 एवं ग्रामीण क्षेत्र के निम्न पालक पाल्य संबंध वाले विद्यार्थियो मे कुठां का मध्यमान 25.3 प्राप्त हुआ पालक पाल्य संबंध शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र कुठां मे अंतःक्रियात्मक प्रभाव पाया गया।

**सारणी क्रंमाक – 1.4**

**पालक–पाल्य संबंध और क्षेत्र के आधार पर कुंठा का मध्यमान तथा प्रमाप विचलन**

| पलक–पाल्य संबंध | शहरी क्षेत्र | | | ग्रामीण क्षेत्र | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | M | SD | N | M | SD | N |
| उच्च | 24.92 | 6.23 | 100 | 23.5 | 6.42 | 100 |
| निम्न | 23.54 | 4.0 | 100 | 25.3 | 7.43 | 100 |

## क्षेत्र एवं लिंग का कुंठा पर अतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन –

प्रसरण के विश्लेषण सारणी क्रमांक 1 मे क्षेत्र एवं लिंग का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव पाया गया है। इस प्रभाव को पुष्टि हेतु शहरी क्षेत्र के मध्यमान 24.7 एवं छात्राओ का मध्यमान 23.75 है जबकि ग्रामीण क्षेत्र के छात्र का कुठां का मध्यमान 25.24 तथा छात्राओ का कुठां का मध्यमान 25.89 पाया गया। जो स्पष्ट करता है कि क्षेत्र एवं लिग का अतः क्रियात्मक प्रभाव पाया गया।

**सारणी क्रंमाक – 1.5**

**क्षेत्र एवं लिंग के आधार पर कुंठा का मध्यमान तथा प्रमाप विचलन**

| क्षेत्र | छात्र | | | छात्राएं | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | M | SD | N | M | SD | N |
| शहरी | 24.71 | 6.6 | 100 | 23.75 | 3.41 | 100 |
| ग्रामीण | 25.24 | 6.6 | 100 | 25.89 | 7.22 | 100 |

## पालक–पाल्य संबंध, लिंग और क्षेत्र का कुंठा पर अतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन –

प्रसरण के विश्लेषण सारणी क्रंमाक 1 मे पालक–पाल्य संबंध, लिंग एवं क्षेत्र का एफ मूल्य 4.800 (स्वतंत्र अंश 166) है जो कि 0.001 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अतः हम कह सकते है पालक–पाल्य संबंध, लिंग एवं क्षेत्र का सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव पाया गया।

प्रसरण के विश्लेषण सारणी क्रमांक–1.6 से स्पष्ट होता है कि उच्च पालक–पाल्य संबंध, लिंग और क्षेत्र का अंतःक्रियात्मक प्रभाव पाया गया है। इस प्रभाव की पुष्टि हेतु शहरी क्षेत्र के उच्च पालक–पाल्य संबंध वाले छात्रों की कुंठा का मध्यमान 25.22 तथा निम्न पालक–पाल्य संबंध वाले छात्राओं की कुंठा का मध्यमान 22.84 है। जबकि ग्रामीण क्षेत्र के उच्च पालक–पाल्य संबंध वाले छात्रों की कुंठा का मध्यमान 26.58 तथा निम्न पालक–पाल्य संबंध वाले छात्रों की कुंठा का 26.58 है। इसी प्रकार उच्च पालक–पाल्य संबंध वाली छात्राओं की कुंठा का मध्यमान 26.3 एवं निम्न पालक–पाल्य संबंध वाले छात्राओं की कुंठा का मध्यमान 25.26 पाया गया है। अतः स्पष्ट होता है कि उच्च पालक–पाल्य संबंध वाले शहरी छात्रों की कुंठा उच्च पालक–पाल्य संबंध वाले छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गई।

**सारणी क्रंमाक – 1.6**

**पालक–पाल्य संबंध, लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर कुंठा का मध्यमान तथा प्रमाप विचलन**

| पालक–पाल्य संबंध | शहरी क्षेत्र | | | | | | ग्रामीण क्षेत्र | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | छात्र | | | छात्राए | | | छात्र | | | छात्राए | | |
| | M | SD | N | M | SD | N | M | SD | N | M | SD | N |
| उच्च | 25.22 | 6.415 | 50 | 26.3 | 6.46 | 50 | 26.58 | 8.01 | 50 | 23.26 | 3.34 | 50 |
| निम्न | 22.84 | 3.914 | 50 | 24.24 | 3.85 | 50 | 25.26 | 6.99 | 50 | 25.48 | 7.05 | 50 |

**अध्ययन के निष्कर्ष –**

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट है कि किशोर विद्यार्थियो के पालक–पाल्य संबंध लिंग एवं क्षेत्र का उनके कुंठा पर सार्थक अन्तः क्रियात्मक प्रभाव पाया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न परिणाम स्पष्ट हुए हैं, जिन्हें बिन्दुवार प्रस्तुत किया गया है –

1. किशोर विद्यार्थियो के पालक–पाल्य संबंध का कुंठा पर प्रभाव पड़ता है।
2. उच्च पालक–पाल्य संबंध वाले किशोर विद्यार्थियों की कुंठा निम्न पालक–पाल्य संबंध वाले किशोरों से अधिक पाई गई।
3. छात्रों की कुंठा छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गई है।
4. शहरी एवं ग्रामीण किशोर विद्यार्थियों की कुंठा में कोई अंतर नहीं पाया गया।
5. उच्च पालक–पाल्य संबंध वाले छात्रों की कुंठा छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गई।
6. निम्न पालक–पाल्य संबंध वाले छात्रों की कुंठा छात्राओं की तुलना में कम पाई गई।
7. उच्च पालक–पाल्य संबंध वाले शहरी विद्यार्थियों की कुंठा ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाई गई।
8. निम्न पालक–पाल्य संबंध वाले शहरी विद्यार्थियों की कुंठा ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में कम पाई गई।
9. शहरी छात्रों की कुंठा शहरी छात्राओं से अधिक पाई गई।
10. ग्रामीण छात्रों की कुंठा शहरी छात्राओं से कम पाई गई।
11. उच्च पालक–पाल्य संबंध वाले शहरी छात्रों की कुंठा छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गई।
12. उच्च पालक–पाल्य संबंध वाले ग्रामीण छात्रों की कुंठा छात्राओं की तुलना में कम पाई गई।
13. निम्न पालक–पाल्य संबंध वाले शहरी छात्रों की कुंठा छात्राओं की तुलना में कम पाई गई।
14. निम्न पालक–पाल्य संबंध वाले ग्रामीण छात्रों की कुंठा छात्राओं की तुलना में कम पाई गई।

## सुझाव –

उपरोक्त शोध निष्कर्ष के आधार पर निम्न सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं–

- पालक लिंग के आधार पर अपने पाल्यों में किसी भी प्रकार का अतंर ना करें। किशोरावस्था आयु की दृष्टि से शरीरिक व मानसिक विकास की दृष्टि से भी सघंर्ष का काल माना गया है। अतः इस अवस्था मे पालकों के द्वारा किये गए व्यवहार का प्रभाव बच्चों पर अधिाक पडता है।
- पालकों के द्वारा पाल्यों के साथ सम्प्रेषण किया जाना चाहिए। उचित सम्प्रेषण के अभाव में भी पालक–पाल्य संबंध खराब हो जाते है। जिनके फलस्वरूप बहुत सी मनोवैज्ञानिक समस्याओं का भय बना रहता है।
- पालकों को अपने पाल्यों की तुलना भी दूसरे बच्चे के साथ नही करना चाहिए। व्यक्तिगत भिन्नता अपने आप मे एक बडा सत्य है। कोई भी दो मनुष्य एक समान नही हो सकते उनमे कुछ न कुछ भिन्नता या उनके द्वारा किए गए कार्य कौशल में अंतर अवश्य पाया जाता है। पालक–पाल्य संबंध का आधार उपेक्षा, अत्यंत संरक्षण या दण्ड सर्वथा अनुचित है।
- पालकों को अपने बच्चों को ना ही अत्याधिक संरक्षण देना चाहिए और ना ही पूरी छूट दी जानी चाहिए। कई बार देखा गया है कि उच्च पालक–पाल्य संबंध होने के कारण भी बालकों व बालिकाओं मे कुंठा की प्रवृत्ति पाई गई। इसका मुख्य कारण उन बालक बालिकाओं के पालकों का उच्च संबंध जिम्मेदार होता है। कई मातापिता अधिक संरक्षण और लाड प्यार के कारण अपने बच्चे को आत्मनिर्भर नही बना पाते। वह बच्चे अतिसंरक्षण के कारण सफलता अर्जित करने हेतु उचित मेहनत नही कर पाते तथा समाज मे समायोजन नही कर पाते।
- शहरी किशोरों में ग्रामीण किशोरों की तुलना में कुंठा का स्तर अधिक पाया गया है। इसका कारण पालकों का अधिक व्यस्त रहना, पाल्य के साथ उचित सम्प्रेषण न होना किशोरो में सामान्य परेशानी या डर भी धीरे धीरे कुंठा का रूप ले लेती है। शहरी किशोरों मे प्रतिस्पर्धा और शिक्षा को लेकर अधिक कुंठा पायी जाती है।

**References –**

**Sharma, C. M. (1962).** A study of reaction on frustration among the super normal. Normal and normal M.EdDiss. Rajasthan patrika,5.

**Mathur, T. B. (1970).** Cause of frustration in adolescent ans in relation with the level of aspiration Ph.D.Edu.Agrau.125,

**Mathur. (2000).** Education Psychology.Agra.:Vinod Book Temple,128.

**Mathur. (2002).** Education Psychology (26th ed.).Agra:Vinod Book Temple,155.

**Verma K. Khan S. (2014).** A study of impact of parent child relationship on self confidence of the student of higher secondary school of durg district. Indian Journal of Research Paripex,3(2),77-78.

**Kaur (2015).** comparative study of impact of parent child relationship on emotional competence of adolescents of Punjab and Haryana state. Recent researches in Educational and Psychology, 12,(1-11), 45-52.

**Kaur, Amandeep,(2007).** Comparative study of impact of parent child relationship on emotional on competence of adolescents of Punjab and Haryana State. Recent researches in Education and Psychology,12,(I-II),45-52.

**Kumar. (2012).** academic achievement in relation to school enviorment and mantel helth students among highschool students. Indian journal of research, 75.

**Sharma, S.N.(2002).** A study of the effect of parental involvement and aspirations on academic achievement of students. Indian Education,3(2),68.